

श्रीः  
श्रीमते रामानुजाय नमः  
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः  
श्रीसीतालम्हणभरतशक्रुहनुमंसमेत श्रीरामचन्द्र परब्रह्मणे नमः

श्रीमद्रामायणे राल्मीकीये आदिकार्ये अयोध्याकाण्डे  
॥ सप्तशीतितमः सर्गः ॥

*This document has been prepared by*

*Sunder Kidāmbi*

*with the blessings of*

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

*His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam*

श्रीः  
श्रीमते रामानुजाय नमः  
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः  
श्रीसीतालम्बणभरतशक्रघ्नहनुमत्समेत श्रीरामचन्द्र परब्रह्मणे नमः

## ॥ सप्ताशीतितमः सर्गः ॥

भरतस्य मूर्च्छया गुहस्य शक्रघ्नस्य मातृणां च दुःखं संज्जामाप्तस्य  
भरतस्य गुहं प्रति श्रीरामप्रभृतीनां भोजनशयनविषये प्रश्नो  
गुहेन तं प्रति सम्पूर्णवृत्तस्य वर्णनम्

गुहस्य रचनं श्रुत्वा भरतो भृशमप्रियम्।  
ध्यानं जगाम तत्रैव यत्र तच्छ्रुतमप्रियम् ॥ 2.87.1 ॥

सुकुमारो महासत्त्वः सिंहस्कन्धो महाभुजः।  
पुण्डरीकरिशालाङ्गुलस्रुणः प्रियदर्शनः ॥ 2.87.2 ॥

प्रत्याश्रयस्य मुहुर्तं तु कालं परमदुर्मनाः।  
ससाद सहसा तोत्रैर्हृदि रिद्धि ईर द्विपः ॥ 2.87.3 ॥

भरतं मूर्च्छितं दृष्ट्वा विरर्णरदनो गुहः।  
बभूव व्यथितस्तत्र भूमिकम्पे यथा क्रमः ॥ 2.87.4 ॥

तदस्त्रं तु भरतं शक्रघ्नोहनन्तरस्थितः।  
परिभ्रज्य रुरोदोच्छैरिसंज्जः शोककर्षितः ॥ 2.87.5 ॥

ततः सर्वाः समापेतुर्मातरौ भरतस्य ताः।  
उपरसकृशा दीना भर्तृर्यसनकर्षिताः ॥ 2.87.6 ॥

ताश्च तं पतितं भूमौ रुदत्यः पर्यरारयन्।  
कौसल्या वरनुसृत्येनं दुर्मनाः परिषस्त्रजे ॥ 2.87.7 ॥

বৎসলা স্নং যথা বৎসমুপগুহ্য তপস্বিনী।  
পরিপপ্রচ্ছ ভরতং রুদতী শোকলালসা ॥ 2.87.8 ॥

পুত্র ব্যাধিন্ তে কচ্চিচ্ছরীরং প্রতি বাধতে।  
অস্য রাজকুলস্যাদ্যৎ রুদধীনং হি জীরিতম্ ॥ 2.87.9 ॥

ৎরাং দৃষ্টরা পুত্র জীরামি রামে সভ্রাতৃকে গতে।  
বৃত্তে দশরথে রাজ্জি নাথ একস্তুমদ্য নঃ ॥ 2.87.10 ॥

কচ্চিন্ন লক্ষ্মণে পুত্র শ্রুতং তে কিঞ্চিদপ্রিয়ম্।  
পুত্রে রা হ্যেকপুত্রায়াঃ সহভার্যে বনং গতে ॥ 2.87.11 ॥

স মুহূর্তং সমাশ্রস্য রুদনের মহাযশাঃ।  
কৌসল্যা পরিসান্বেদ্যং গুহং রচনমব্রবীৎ ॥ 2.87.12 ॥

ভ্রাতা মে ক্লারসদ্ রাতৌ ক্ল সীতা ক্ল চ লক্ষ্মণঃ।  
অস্বপচ্ছযনে কস্মিন্ কিং ডুকত্বা গুহ শংস মে ॥ 2.87.13 ॥

সোহব্রবীদ্ ভরতং হৃষ্টো নিষাদাধিপতির্গুহঃ।  
যদ্বিধং প্রতিপেদে চ রামে প্রিয়হিতেহতিথৌ ॥ 2.87.14 ॥

অন্নমুচ্চারচং ভক্ষ্যাঃ ফলানি রিরিধানি চ।  
রামাযাভ্যরহারার্থং বহুশোহপহুতং মযা ॥ 2.87.15 ॥

তৎ সর্ং প্রত্যনুজ্ঞাসীদ্ রামঃ সত্যপরাক্রমঃ।  
ন হি তৎ প্রত্যগূহ্নাৎ স ক্ষত্রধর্মমনুস্মরন্ ॥ 2.87.16 ॥

নহস্মাভিঃ প্রতিগ্রাহ্যং সখে দেযং তু সর্দা।  
ইতি তেন বযং সর্বে অনুনীতা মহাঅনা ॥ 2.87.17 ॥

লক্ষ্মণেন যদানীতং পীতং রারি মহাঅনা।  
ঔপরাস্যং তদাকার্ষীদ্ রাঘবঃ সহ সীতযা ॥ 2.87.18 ॥

ততস্তু জলশেষেণ লক্ষ্মণোহপ্যকরোৎ তদা।  
রাগ্যতাস্তে ত্রযঃ সন্ধ্যাং সমুপাসন্ত সংহিতাঃ ॥ 2.87.19 ॥

সৌমিত্রিস্তু ততঃ পশ্চাদকরোৎ স্বাস্তরং শুভম্।  
স্বয়মানীয বহীংষি ক্ষিপ্রং রাঘরকারণাৎ ॥ 2.87.20 ॥

তস্মিন্ সমারিশদ্ রামঃ স্বাস্তরে সহ সীতয়া।  
প্রক্ষাল্য চ তযোঃ পাদৌ ব্যপাক্রামৎ সলক্ষ্মণঃ ॥ 2.87.21 ॥

এতৎ তদিঙ্গুদীমূলমিদমের চ তৎ তৃণম্।  
যস্মিন্ রামশ্চ সীতা চ রাত্রিং তাং শযিতাবুভৌ ॥ 2.87.22 ॥

নিযম্য পৃষ্ঠে তু তলাঙ্গুলিত্ররাঞ্ -  
শরৈঃ সুপূর্ণারিষুধী পরন্তপঃ।  
মহদ্ধনুঃ সজ্জমুপোহ্য লক্ষ্মণো  
নিশামতিষ্ঠৎ পরিতোহস্য কেবলম্ ॥ 2.87.23 ॥

ততস্তুহং চোত্তমবাণচাপভূৎ  
স্থিতোহভরং তত্র স যত্র লক্ষ্মণঃ।  
অতন্দ্ৰিতৈর্জাতিভিরাত্তকামুকৈ -  
র্মহেন্দ্রকল্পং পরিপালয়ংস্তদা ॥ 2.87.24 ॥

॥ ইত্যর্ষে শ্রীমদ্রামায়ণে বাল্মীকীয়ে আদিকাৰ্যে  
অযোধ্যাকাণ্ডে সপ্তাশীতমঃ সর্গঃ ॥